गरीबी से जूझता गाँव : शिक्षा से जागती उम्मीदें

शशि*

उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद अमेठी का एक छोटा सा गाँव 'खुन्ना का ताल' रामपुर चौधरी, थाना जामों, तहसील गौरीगंज में स्थित है। वर्तमान में इस गाँव में मुश्किल से 50-60 घर होंगें, जिनमें 5-7 परिवारों को छोड़ दिया जाए तो किसी के पास जमीन नहीं है। इस गाँव में सभी दलित ही निवास करते हैं, जिन्हें 'नट' कहा जाता है। इनका पारंपरिक व्यवसाय अखाड़ा लड़ाना, कुश्ती सिखाना, शहद निकालना था, जिनमें से कुछ लोग आज भी वही कार्य करते हैं तो कुछ लोग मजदूरी कर अपना परिवार पालते हैं। आज से लगभग 20-25 वर्ष पहले यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नहीं था। यहाँ की बेटियाँ सिर्फ घर के काम तक ही सीमित रहती थीं। इस क्षेत्र में दूर-दूर तक कोई विद्यालय नहीं था, जहाँ पर इस गाँव के बच्चे पढ़ने जाते।

कुछ वर्ष पहले गाँव से थोड़ी दूरी पर एक गाँव हसरमपुर है, जहाँ प्राथमिक विद्यालय खुला जिसमें कुछ बच्चे पढ़ने जाने लगे। गरीबी के कारण उसमें भी बच्चे पढ़ने नहीं जा पाते थे। कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो पढ़ना-लिखना चाहते ही नहीं थे। दिन भर घूमना-खेलना ही उनकी दिनचर्या बन चुकी थी। कुछ बच्चे जो विद्यालय जाना चाहते थे, उनको उनके अभिभावक काम में लगा देते थे। ऐसे में गाँव की स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही पीछे थी।

हमारे गाँव के राम नरेश, ओम प्रकाश, राममूरत जो अब हमारे बीच नहीं रहे, गाँव के पहले शिक्षित व्यक्ति थे, जिन्होंने गाँव की शिक्षा व्यवस्था को आगे बढ़ाया। इनका अनुसरण कर गाँव के और बच्चे भी स्कूल जाने के लिए लालायित होने लगे। धीरे-धीरे गाँव के लगभग सारे बच्चे प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने जाने लगे। कुछ बच्चे ऐसे थे जो कक्षा 5 तक ही पढ़े क्योंकि प्राथमिक विद्यालय के अलावा आस-पास और कोई विद्यालय नहीं था। आज भी वह प्राथमिक विद्यालय है, जहाँ से हमारे गाँव की शिक्षा व्यवस्था शुरू हुई।

गाँव से लगभग 3-4 किलोमीटर दूरी पर नवचेतना नामक एक प्राइवेट विद्यालय था। जिसमें गरीब घर के बच्चों का पढ़ पाना एक सपने जैसा ही था। जिनके पास अपने बच्चों को भेजने की हैसियत थी वो इतनी दूर भेजना नहीं चाहते थे, क्योंकि अब तो वहाँ सड़कें बन गई हैं। पहले वहाँ पूरा जंगल था और वहाँ जाने के लिए जंगल के रास्ते से होकर ही जाना पड़ता था।

प्राथमिक विद्यालय, हसरमपुर, अमेठी

गाँव के कुछ लोग (ओमप्रकाश, विमला, सुशीला, हरिप्रसाद) जो किसी तरह चौथी-पाँचवीं तक पढ़ाई किये थे, परिस्थितियों के मार के कारण आगे नहीं पढ़ पाए। उनको पढ़ाई का महत्व पता था, उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ने के लिए जामों (गांव से थोड़ी दूर एवं थाना के करीब स्थित अध्ययस्थल) भेजा। इन्हीं लोगों की देखा-देखी और भी लोग अपने बच्चों को विद्यालय भेजने लगे। जो बच्चे अभी तक घूमते थे, वो भी अब प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने के लिए जाने लगे। इसके पीछे एक बड़ा कारण सरकार द्वारा 2005 में चलाई गई 'मिड-डे-मिल' योजना भी थी, जिसमें बच्चों को पका-पकाया भोजन मिलने लगा। जिसके लालच में भी बच्चे स्कूल की ओर खिंचने लगे। 2009 में सरकार द्वारा एक अधिनियम लाया गया जिसमें कक्षा 1 से 8 तक के अर्थात् 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाने लगी। जिससे धीरे-धीरे ग्रामीण इलाकों में शिक्षा व्यवस्था में सुधार होने लगा।

* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

लड़कों को हमेशा से ही कहीं आने-जाने में कोई रोक-टोक नहीं है, वो कहीं भी पढ़ने जा सकते थे। लड़कियों के लिए हमेशा से ही बंदिशें रही हैं। कोई भी अभिभावक उन्हें बाहर पढ़ने जाने के लिए इजाजत नहीं देता था। यहाँ तक कि अभी भी बड़ी मुश्किल से बाहर जाने की अनुमति मिलती है। यहाँ गाँव के आस-पास दूर-दूर तक कोई महाविद्यालय नहीं था। जामों में कक्षा 12 तक के ही स्कूल थे। बाहर पढ़ने भेजने की सबकी हैसियत भी नहीं थी। जिनकी थी भी वो बाहर अकेले लड़कियों को भेजते नहीं थे, जिसके कारण बहुत से बच्चों की पढ़ाई छूट जाती थी।

2009 में जामों के राजा अक्षय प्रताप सिंह (गोपाल जी) ने गाँव के पास में ही एक महाविद्यालय खोला। अपनी माँ के नाम पर उस विद्यालय का नामकरण किया 'रानी गणेश कुंवरि महाविद्यालय'। इस महाविद्यालय के खुल जाने से आस-पास के गाँव के लड़कियों और लड़कों की शिक्षा व्यवस्था में काफी सुधार देखने को मिला। गाँव की पहली लड़की हैं सुमन और शशि जो कि सगी बहनें हैं, जिन्होंने इस महाविद्यालय से पहली बार बी.ए. की पढ़ाई पूरी की। अगर यह महाविद्यालय न खुलता तो शायद वो आगे की पढ़ाई भी न कर पाती, क्योंकि उनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। इस महाविद्यालय की जितनी फीस थी, उससे ज्यादा बच्चों को स्कॉलरशिप मिल जाती थी। इससे उनकी पढ़ाई में किसी तरह की रुकावट नहीं आती। उसमें से सुमन आज प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका है, जो गाँव की पहली सरकारी सर्विस करने वाली लड़की है, तो शशि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में पीएचडी की शोधार्थी है। सविता इसी महाविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका है। इस महविद्यालय के खुल जाने से लड़कियों को उच्च शिक्षा हासिल करने में काफी सुविधा मिल गई। वर्तमान में इस महाविद्यालय में गाँव के कई लड़के और लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। दीपा, कविता, दिव्या, माला इस महाविद्यालय में अभी पढ़ाई कर रही हैं। पहले इस महाविद्यालय में बी.ए., एम.ए., बी.एड. के पाठ्यक्रम संचालित होते थे। अभी बी.एस.सी., बी.टी.सी. भी संचालित होने लगा है।

रानी गणेश कुंवरि महाविद्यालय, सुल्तानपुर

इससे पहले गाँव की ही कंचन और सुष्मिता दो बहनों ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी की। घर की आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण बच्चों को बाहर पढ़ने भेजने में कोई दिक्कत नहीं हुई। कंचन इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से अपनी पीएचडी की पढ़ाई पूरी की। अभी हाल-फिलहाल में वह उत्तर प्रदेश पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा पास कर एस.डी.एम. के पद पर नियुक्त हैं। कंचन वर्तमान में गाँव की पहली और इकलौती एस.डी.एम. हैं। इनकी छोटी बहन सुष्मिता वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका हैं। पूरे गाँव में कुल दो ही लड़कियां हैं कंचन और शशि जो अभी तक पीएचडी की शिक्षा तक पहुँच सकी हैं। वर्तमान में पूरे गाँव में कोई लड़का भी नहीं है, जो पीएचडी किया हो या कर रहा हो। इन्हीं सबकी देखा-देखी अन्य बच्चों के माता-पिता भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए उत्सुक हैं।

शशि और कंचन की फाइल फोटो

ये तो बात हुई लड़कियों की शिक्षा को लेकर अब गाँव के लड़कों की शिक्षा पर भी थोड़ी बात कर ली जाय। कुछ लड़के पढ़ाई कर रहे हैं। कुछ सरकारी नौकरी कर रहे हैं तो कुछ लफंगों की तरह घूम रहे हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं, जिनके माता-पिता उन्हें पढ़ाना चाहते हैं पर बच्चे पढ़ना नहीं चाहते।

हमारे गाँव के रविशंकर, मुकेश, राजेन्द्र, वीरेन्द्र, राकेश, सुरेश, प्रदीप, अमित, ज्वालाप्रसाद, शिवम, अग्गन, दीपक आदि लोग सरकारी नौकरी कर रहे हैं। रविशंकर गाँव के पहले सरकारी नौकरी वाले व्यक्ति हैं। 2005-06 में ये सर्वप्रथम प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक हुए थे। बाद में इन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से पीसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की और मार्केटिंग इंस्पेक्टर के पद पर चयनित हुए, जो वर्तमान में रायबरेली जिले में कार्यरत हैं।

गाँव के ही वीरेंद्र जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. और बी.एड. कर प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक बने। अपनी लगातार मेहनत से उन्होंने उत्तर प्रदेश पब्लिक सर्विश कमीशन की परीक्षा पास कर वर्तमान में नायब तहसीलदार के पद को गौरवान्वित कर रहे हैं। इन्हीं की छोटी बहन हैं कंचन जो एस.डी.एम. हुई हैं अभी।

10-15 वर्ष पहले जिस गाँव में सरकारी नौकरी वाला कोई व्यक्ति था ही नहीं, आज वहीं कम से कम 8-10 लोग प्राइमरी के सहायक अध्यापक हैं, तो तीन सफाई कर्मी हैं, कोई एडीओ है, तो कोई स्वास्थ्य विभाग में। इस तरह वर्तमान में इस गाँव में कुल मिलाकर 18-20 लोग होंगें, जो सरकारी सर्विस से जुड़े हुए हैं। धीरे-धीरे यह गाँव उन्नति की ओर बढ़ रहा है। उसका सारा श्रेय उनके माँ-बाप की कड़ी मेहनत और उनके द्वारा उन्हें दी जाने वाली अच्छी शिक्षा को जाता है।

गाँव की उन्नति और शिक्षा की बात कर रहे हैं, तो उसके पीछे कितने माँ बाप की कुर्बानियां हैं। उसकी चर्चा इस लेख में न करना इस लेख के साथ बेमानी होगी। गाँव में एक हैं हरिप्रसाद। जिनके 5 बच्चे हैं। सबसे बड़ा बेटा, उसके बाद 4 बेटियाँ। हरिप्रसाद दूसरी-तीसरी कक्षा के बाद न पढ़ सके। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन उनकी पढ़ाई परिस्थितियों की भेंट चढ़ गई। हरिप्रसाद की पत्नी रेनू अनपढ़ हैं। वो कभी स्कूल तक नहीं गई हैं। हरिप्रसाद का पढ़ाई न कर पाने का जो मलाल था उससे वह जीवन भर न उबर सके। जिसका नतीजा यह हुआ कि चट्टान की तरह वह हर परिस्थिति से लड़कर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने की ठान ली। हरिप्रसाद के पास जमीन-जायदाद के नाम पर कुछ नहीं था। एक कच्चा मिट्टी का घर था, जिसमें वह रहकर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और उनके उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे थे। उसके बड़े बेटे अमित का पांचवीं कक्षा के बाद जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश हो गया। हरिप्रसाद के जीवन की यह पहली सफलता थी। अब बेटे की पढ़ाई के खर्चे से भी उन्हें मुक्ति मिल गई। रहना, खाना, कपड़ा, शिक्षा सब कुछ अब उसे सरकार की तरफ से मिलने लगा।

हरिप्रसाद की जिम्मेदारी अभी खत्म नहीं हुई। उनकी 4 बेटियों का पालन-पोषण और उनकी शिक्षा पर काफी खर्चा था। बेटियों का भी अच्छे स्कूल में दाखिला कराया और अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाई। जहाँ सबके माँ-बाप अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में भी भेजने से कतराते थे, वहीं हरिप्रसाद ने अपनी बेटियों को प्राइवेट स्कूल में भेजा। दिन-रात कड़ी मेहनत-मजदूरी करके वह अपने बच्चों को शिक्षा दिलाते रहे। बदनसीबी तो देखिये कि बेटा नवोदय विद्यालय से बायोलॉजी से 12वीं पढ़कर डॉक्टर बनने का सपना लेकर घर लौटा तो उसके पिता हरिप्रसाद का पैर कट गया, जिससे घर में चार पैसे आने भी बंद हो गए। उस समय

हरिप्रसाद की 2 बेटियाँ सुमन और शशि10वीं कक्षा में पढ़ाई कर रही थीं। ऐसे में घर का खर्चा, पिता के इलाज का खर्चा और बहनों की पढ़ाई का खर्चा कहाँ से आता? इसी जिम्मेदारी के बोझ को उठाने के लिए बेटे अमित ने अपने सपने की तिलांजलि देते हुए उसी स्कूल में पढ़ाने लगा जहाँ उसकी बहनें पढ़ाई कर रही थीं। ऐसे में बहनों के स्कूल की फीस से भी मुक्ति मिल गई और घर के खर्चे को भी एक आधार मिल गया। बेटे ने पढ़ाने के साथ-साथ मेडिकल की तैयारी घर पर स्वयं से ही जारी रखी। उसमें हुआ भी था लेकिन सरकारी कॉलेज नहीं मिला। प्राइवेट में भेजने का रुतबा था नहीं, अंत में उसे अपने सपने से हाथ धोना पड़ा।

अमित की दो बहनों (सुमन और शशि) का 12वीं तक की पढ़ाई हो जाने के बाद अमित अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अपना नामांकन बी.ए. में करा लिया और दोनों बहनों का घर के पास के कॉलेज रानी गणेश कुंवरि महाविद्यालय में बी.ए. में नामांकन करा दिया। अब उनके पिता हरिप्रसाद का पैर भी काफी इलाज के बाद ठीक हो गया था। हरिप्रसाद की तीसरे नंबर की बेटी सविता भी अब 9वीं कक्षा में पहुँच चुकी थी। अमित बी.ए. कर सुल्तानपुर डायट से बी.टी.सी. कर आज प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक है। बड़ी बेटी सुमन भी बी. ए. के बाद बी.टी.सी. करके प्राथमिक विद्यालय में अध्यापिका है। उससे छोटी बेटी शशि वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से पीएचडी कर रही है। उससे छोटी सविता बी.ए. और बी.टी.सी. की पढ़ाई पूरी कर प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक की परीक्षा भी पास कर चुकी है। हालांकि फिलहाल अभी उसे नियुक्ति पत्र नहीं मिला है। और सबसे छोटी बेटी कविता अभी बी.ए. तृतीय वर्ष में है।

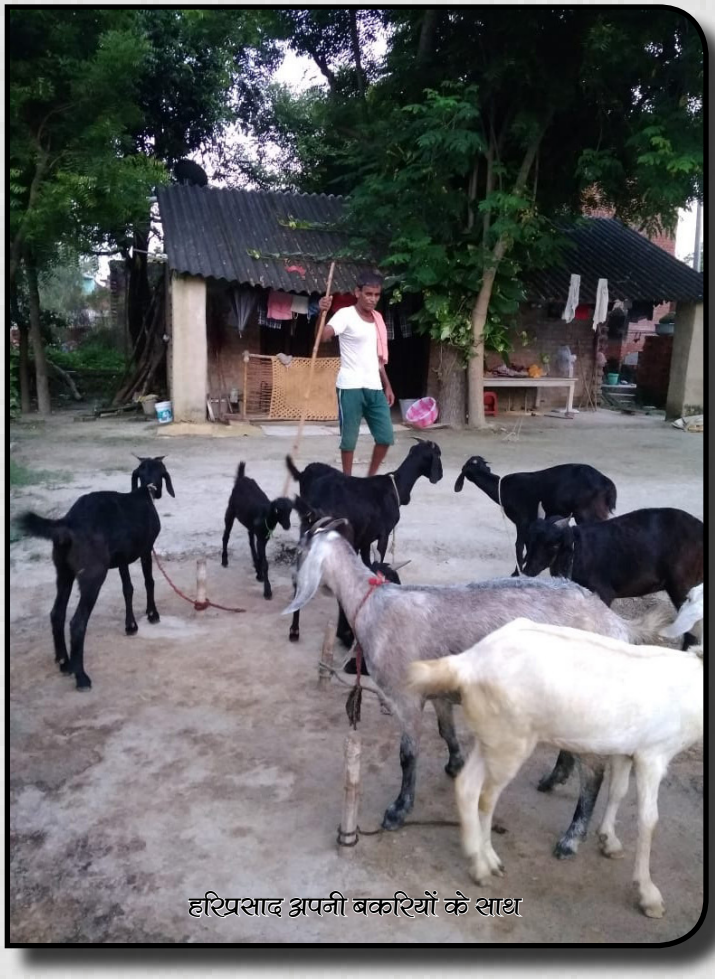
हरिप्रसाद अपनी बकरियों के साथ

यह सब एक पिता अर्थात् हरिप्रसाद जी की कड़ी मेहनत का ही नतीजा है, जो आज उनके सभी बच्चे अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सके हैं और अच्छे ओहदे पर पहुँच चुके हैं। दो-तीन बच्चे सरकारी नौकरी में कार्यरत हो गए हैं, फिर भी हरिप्रसाद काम करने से मुंह नहीं चुराते। 60-65 साल की उम्र में भी वो 8-10 बकरियां पाले हुए हैं और उन्हीं को सुबह-शाम टहलाना, खिलाना-पिलाना आदि करते रहते हैं। उनके पूरे जीवन की कमाई उनके बच्चों की शिक्षा है। शिक्षा को लेकर अपने जीवन में असफल होते हुए भी यह एक सफल पिता की कहानी है, क्योंकि वह अपने बच्चों की सफलता में ही अपने जीवन को देखते हैं।

उसी गाँव में ही एक हैं छोटेलाल, जिनके सात बच्चे हैं। छोटेलाल की कोई जमीन नहीं है। वह अनपढ़ हैं और मजदूरी करके अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। इतना बड़ा परिवार और कमाने वाला सिर्फ एक व्यक्ति वह भी मजदूरी, ऐसे में बच्चों को शिक्षा दे पाना बहुत दूर की बात है। बड़े बेटे सोनू और बेटी छाया का नामांकन गाँव के बगल वाले सरकारी स्कूल में करा दिया। सरकारी स्कूल से बड़ा बेटा और बेटी जैसे-तैसे आठवीं पास कर लिये। जैसे-जैसे बच्चे बढ़ने लगे घर का खर्चा और उनके स्कूल का भी खर्चा भी बढ़ने लगा। घर की परिस्थिति देखते हुए आठवीं पढ़ने के बाद बड़ा बेटा सोनू भी अपने पिता की तरह दिहाड़ी-मजदूरी करने लगा। आर्थिक निर्धनता के चलते बड़े बेटे और बेटी की पढ़ाई छूट गई। घर की सारी जिम्मेदारी सोनू ने बहुत छोटी उम्र में ही अपने कंधों पर ले ली, क्योंकि छोटेलाल को काम करते हुए ही अचानक एक दिन लकवा

मार गया। सिर्फ छोटेलाल को ही लकवा नहीं मारा पूरे परिवार पर उसका असर पड़ा। इस तरह अब पूरे परिवार की जिम्मेदारी उन छोटे-छोटे कन्धों पर आ गई जिन पर अभी किताबों का बोझ होना चाहिए था।

सोनू अपनी कमाई से अपना पूरा परिवार संभाले हुए है, साथ ही अपने 5 छोटे भाई-बहनों को शिक्षा भी दिला रहा है। अपने से छोटे भाई गोविन्द को बी.ए. करने के बाद बी.एड. करा दिया है। अभी वो भी नौकरी के लिए तैयारी कर रहा है, साथ ही कोई काम मिलता है तो कर लेता है। इससे परिवार के खर्चे में थोड़ी मदद मिल जाती है। गोविन्द से छोटा भाई पंकज अभी एम.ए. कर रहा है, उससे छोटी दो बहनें हैं दीपा और दिव्या जो कि अभी बी.ए. कर रही हैं। सबसे छोटा भाई पवन अभी 10वीं कक्षा में है।

गांव में दिहाड़ी करते मजदूर

इससे साफ स्पष्ट होता है कि सोनू अपने भाई-बहन को अच्छी शिक्षा दिलाने और उनका भरण-पोषण करने के पीछे अपनी जिन्दगी गिरवी रख दिया है। आज भी वह महीने के तीसों दिन दिहाड़ी-मजदूरी करता है तो घर का खर्च चलता है। सरकारी नौकरी वालों को तो महीने में 5-6 छुट्टी मिल जाती है, लेकिन दिहाड़ी-मजदूरी करने वाले जिनके सिर पर परिवार का बोझ हो और रोज की सिर्फ 200 रुपये कमाई हो ऐसे में वह चाह कर भी छुट्टी नहीं कर सकता। सोनू से छोटी छाया थी, उसकी शादी कर दिए। वो 8वीं तक ही पढ़ पाई थी। ये तो एक दो व्यक्तियों की कहानी है। ऐसे ही न जाने कितने सोनू और कितने हरिप्रसाद हैं, जो अपने भाई-बहन और अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए दिन भर मजदूरी करके जिन्दगी और मौत से जूझ रहे हैं।

अंत में मैं यही कहूँगी कि यह तो सिर्फ एक गाँव की बात है। ऐसे ही न जाने देश भर में कितने गाँव, कितने कस्बे, कितने परिवार होंगे जो आए दिन इस तरह की दिक्कतों से जूझ रहे होंगे। शहर में बैठे हम और आप जैसे लोग उन दिक्कतों और उन मुसीबतों के बारे में सोचते भी नहीं हैं। हमारे भारतीय समाज में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक निर्धनता और भुखमरी बहुत बड़ी समस्या है। जो परिवार इन समस्याओं से जूझ रहे हैं, वो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मुहैया करा पा रहे हैं। अच्छी शिक्षा ही हमारे व्यक्तित्व को और हमारे जीवन को बनाती है, इसीलिए शिक्षा एक ऐसी चीज है, जिसे पाने का अधिकार सबको होना चाहिए लेकिन प्राइवेटाइजेशन ने शिक्षा को भी कुछ ही वर्ग के लोगों तक सीमित कर दिया है। इस पर भी बुद्धिजीवी समाज एवं सरकारों को अवश्य ही विचार करना चाहिए।

*****